शोध मंथन Vol. XIII No.I Jan.-Mar.2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.783 (SJIF)

राजस्थानी समकालीन कलाकार कृपाल सिंह शेखावत जी की कला का विवेचनात्मक अध्ययन

प्राप्तिः 07.03.2022
स्वीकृतः 17.03.2022

ज्योति रानी
शोधार्थी, ललित कला विभाग
मेरठ कॉलेज, मेरठ
ईमेलः *pawankumarjyoti5@gmail.com*

सारांश

राजस्थानी कला के विषय में जानने से ज्ञात होता है कि राजस्थानी परम्परा प्रारंभ से ही महत्वपूर्ण रही है किन्तु स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व भारत पर अंग्रेजी शासन होने के कारण भारतीय कला में पाश्चात्य प्रभाव आने लगा था। परंपरागत राजस्थानी चित्रकला में कार्य कम होने लगा अर्थात राजस्थानी कला का महत्व कम होता जा रहा था। परंपरागत राजस्थानी चित्रकला के अंतिम क्षेत्र नाथद्वारा में भी सिर्फ तीर्थयात्रियों की मांग पूरी होने पर ही कार्य हो रहा था। भारतीय कला का प्राचीन वैभव तथा गरिमा पूरी तरह लुप्त होती जा रही थी।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात कुछ कलाकारो के प्रयोग द्वारा भारतीय कला परंपरा पुनः जागृत होने लगी। बंगाल कला पुनजार्गरण के साथ ही लुप्त हुई राजस्थानी कला में भी नया दौर आरंभ हुआ। जयपुर में बंगाल की वॉश पद्धति के आरम्भ होने के बाद बहुत से कलाकारो ने वॉश तकनीक में कार्य करना आरम्भ किया। जयपुर के कृपाल सिंह शेखावत जी ने भी अपनी कला का आरम्भ वॉश तकनीक से किया। इन्होंने अपनी कला शैली द्वारा राजस्थानी कला जगत में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

प्रस्तावना

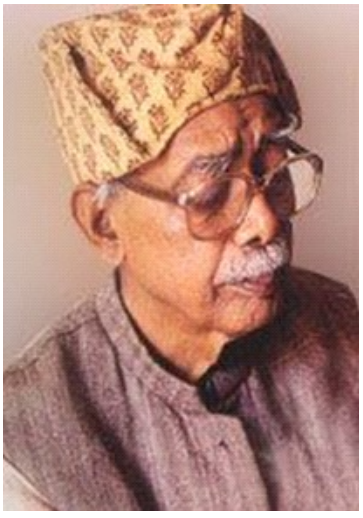

राजस्थान की पावन कला धरा पर शेखावटी क्षेत्र के मऊ गांव में ''कृपाल सिंह शेखावत जी का जन्म 11 दिसम्बर सन् 1922''[1] में एक प्राचीन राजपूत ठाकुर परिवार में हुआ। इनके परिवार में किसी भी सदस्य का चित्रकारी से कोई सम्बन्ध नहीं था किन्तु इन्होंने बचपन में उन कलाकारों को देखा जो पीतल, लाख व लकड़ी में कलात्मक कार्य करते थे तथा उन्हें देखकर ही शेखावत जी के हृदय में कला के प्रति रुचि उत्पन्न हुई। शेखावत जी ने अपनी आरम्भिक शिक्षा झुन्झुनूँ जिले के अलसीसर गाँव के कृपाल सिंह शेखावत माध यमिक स्कूल से पूर्ण की। जब ये विद्यालय में अध्ययनरत् थे तभी इन्हें अपनी उम्र से सात वर्ष बडे यर्थाथवादी शैली के सुप्रसिद्ध चित्रकार भूरसिंह शेखावत जी के विषय में ज्ञात हुआ। भूरसिंह शेखावत जी इस समय पिलानी में कार्यरत् थे।

इनके विषय में ज्ञान होने पर कृपाल सिंह जी ने इनसे मिलने पिलानी जाने का निर्णय किया। इसके पश्चात् कृपाल सिंह जी ने भूरेसिंह शेखावत जी के निर्देशन में ही चित्राकंन कार्य करना प्रारम्भ किया। तत्पश्चात् कृपाल सिंह जी ने 'लखनऊ स्कूल ऑफ आर्ट्स' में चित्रकला की शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रवेश लिया। इस विद्यालय में एक वर्ष अध्ययन करने के पश्चात् सन् 1943 ई0 में ये शान्ति निकेतन, पश्चिम बंगाल चले गये। जहाँ इन्होंने विनोद बिहारी मुखर्जी तथा नन्दलाल बोस जी के निर्देशन में ही अपना कला का डिप्लोमा पूर्ण किया। शान्ति निकेतन में अपने अध्ययन काल के समय में ही शेखावत जी ने हिन्दी भवन के एक भित्ति चित्र को बनाने का कार्य पूर्ण किया। शान्ति निकेतन में चित्रकला अध ययन के समय में इन्होंने बहुत से रेखाचित्र चित्रित किये। इसी समय इन्होंने तिब्बत और नेपाल की यात्रा भी की। इसके बाद शेखावत जी जापान चले गये तथा वहीं पर इन्होंने अपना त्रिवर्षीय कला डिप्लोमा पूर्ण किया इन्होंने अपने चित्रकला अध्ययन के दौरान विश्व के प्रमुख कला तीर्थो का भ्रमण किया तथा इन्होंने भारत की कलाओं के साथ–साथ अन्य देशों की कलाओं के विषय में भी ज्ञान अर्जित किया।

''जापान के महान कलाकार माईदा सेसों, ताईकान और ओताचोऊ यूईसी आदि कला गुरुओं के सानिध्य ने कृपाल सिंह के कलाकार व्यक्तित्व को चार चांद लगा दिए।''[2] कृपाल सिंह जी ने जापान से भारत तक की यात्रा समुन्द्री मार्ग से की। यात्रा के दौरान ही इन्होंने समुन्द्र, लाइटहाउस, तट और बंदरगाहों पर खड़े एवं समुन्द्र में आते–जाते जहाजों को ध्यानपूर्वक देखा व समझा तथा 40 के करीब स्याही रेखांकन से इन्हें चित्रित किया। इन्होंने समुन्द्री जीवन के विभिन्न दृश्यों का पेन के द्वारा मुक्त स्ट्रोको से चित्रों का अंकन किया।

कृपाल सिंह जी की कला शैली बहुत अधिक गहन और विस्तृत थी। उन्होंने अपनी कला साधना को किसी एक शैली में बाँध कर नही रखा। इनकी कला शैली में अजंता, राजस्थानी, पहाड़ी, जैन व मालवा, ईरानी, बंगाल तथा जापान आदि कला शैलियों के तत्वों का प्रभाव पाया जाता है। ''राजस्थानी कला शैली, बंगाल कला पद्धति और जापानी कला के परिचय से कृपाल सिंह शेखावत एक अनोखे दृष्टिकोण से चित्रण करने में अभ्यस्त हुए।''[3] इन्होंने बंगाल स्कूल में जयपुर फ्रेस्को पद्धति को समावेशित करके एक मौलिक शैली निर्मित की। यद्यपिः इनकी कला शैली में भारतीय तत्वों की प्रमुखता होने के कारण ही इनकी कला शैली कृपाल शैली कहलायी। सन् 1955 ई0 से 1965 ई0 तक का समय इनकी कला के लिए स्वर्णिम युग रहा। सन् 1965 ई0 से पहले बने इनके चित्र वॉश व टेम्परा तकनीक पर आधारित थे। जिन पर लघु चित्र शैली का प्रभाव था। कृपाल सिंह जी ने राजस्थानी पारंपरिक शैलियों को चित्रण के माध्यम द्वारा परिष्कृत रुप में व्यक्त किया। इन्होंने राजस्थानी परम्परागत लघुचित्र शैली को टेम्परा पद्धति के साथ मिश्रित करके नये संदर्भो में प्रयोग किया इन्होंने वॉश व जलरंगो से हाथी दांत व सिल्क पर चित्रण किया तथा प्रिय चित्रण के रुप में कागज पर टेम्परा पद्धति में कार्य किया।

इसके अतिरिक्त कृपाल सिंह जी ने भित्ति चित्रण में भी कार्य किया। ये भित्ती चित्रण के सिद्धहस्त कलाकार थे। कृपाल सिंह जी द्वारा बनाये गये भित्ती चित्रों को भारत में आज भी विभिन्न जगहों पर देखा जा सकता है। इन्होंने सन् 1945 ई0 में शान्तिनिकेतन, पश्चिम बंगाल के हिन्दी भवन में 'रामायण' के प्रसंगो द्वारा भित्ति चित्रण का कार्य पूर्ण किया तथा सन् 1955–1958 ई0 में इन्होंने नई दिल्ली बिडला हाउस में गांधी जी के जीवन दर्शन सम्बन्धी विशाल भित्ति चित्रों को पूर्ण किया। ''जयपुर रेलवे स्टेशन पर गणगौर मेले का चित्रण, दिल्ली के पांच सितारा होटल ओबेराय कोन्टीनेन्टल

में 'रासमण्डल' का भित्ति चित्रण विशेष उल्लेखनीय है। कृपाल सिंह जी ने नष्ट हो रहे भित्ति चित्रों की अनुकृतियां भी की।''[4] इसके अतिरिक्त इन्होंने केन्द्रीय ललित कला अकादमी, नई दिल्ली में बाघ, टीहरी, नर्मदेश्वर, बैराठ तथा आमेर के भित्ति चित्रो का अंकन भी पूर्ण रुप से सफलतापूर्वक किया।

कृपाल सिंह जी ने ब्लू पॉटरी के क्षेत्र में भी अपने कला कौशल का परिचय दिया। इन्होंने जयपुर में इस मृत हो चुकी कला को पुनः जीवित करके उसे ऊचाईयों तक पहुँचाया। इन्होंने ब्लू पॉटरी में अनेक कार्य किये। इन्होंने ब्लू पॉटरी में जो कच्ची सामग्री प्रयोग की उसमें भी कुछ अन्य वस्तुओं को मिलाकर प्रयोग किया जिससे इसकी कलात्मकता में भी वृद्धि हुई। ''सवाई रामसिंह शिल्पकला मंदिर'' जयपुर में सन् 1963 ई0 में कार्यरत् रहते हुए ही इन्होंने 'नीली पॉटरी' में भी कार्य आरम्भ रखा। ब्लू पॉटरी में नये प्रयोगों के साथ इन्होंने देश–विदेश में भी अपना वर्चस्व स्थापित किया। ''पर्यटन गाइड पुस्तक में कृपाल–कुंभ का नाम दर्शनीय स्थलों में अपना विशेष स्थान रखता है। ब्लू पॉटरी में विशेष रुप से पशु–पक्षियों तथा फूल पत्तों द्वारा अलंकृत किया गया और राजस्थान के लोकनायक–नायिकाओं को भी विषय चित्रण में महत्वपूर्ण रुप से चित्रित किया गया।''[5] कृपाल सिंह जी की कुछ चित्राकृतियों का वर्णन इस प्रकार है–

ब्लू पॉटरी पर चित्रण कार्य करते कृपाल सिंह शेखावत

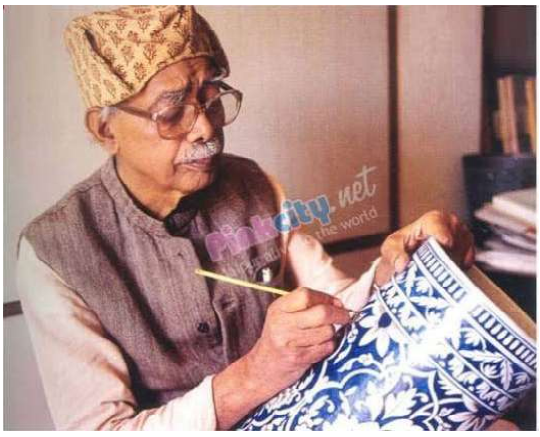

भगवान कृष्ण का जन्म

श्री कृपाल सिंह जी ने इस चित्राकृति में श्रीकृष्ण के जन्म के दृश्य का वर्णन किया है। मध्य रात्रि में जब कृष्ण का जन्म होता है तब श्रीकृष्ण को राजा कंस (श्रीकृष्ण के मामा) से सुरक्षित बचाने के लिए पिता वासुदेव कृष्ण को वृंदावन में अपने मित्र नंदबाबा को देने निकलते है। यह दृश्य उसी समय का है जब इनके पिता वासुदेव ने इन्हे गोद में उठा रखा है तथा प्रसन्न मुद्रा में अपने पुत्र कृष्ण को निहार रहे है। पीछे इनकी माता देवकी खडी है। वह भी प्रसन्न मुद्रा में श्रीकृष्ण को निहार रही है एवं अपने पति वासुदेव को कृष्ण को ले जाते हुए देख रही है। वहाँ तैनात पहरेदार को भूमि पर निंद्रा में बैठे हुए चित्रित किया गया है जो हाथ में तलवार पकड़े हुए तथा शीश को नीचे

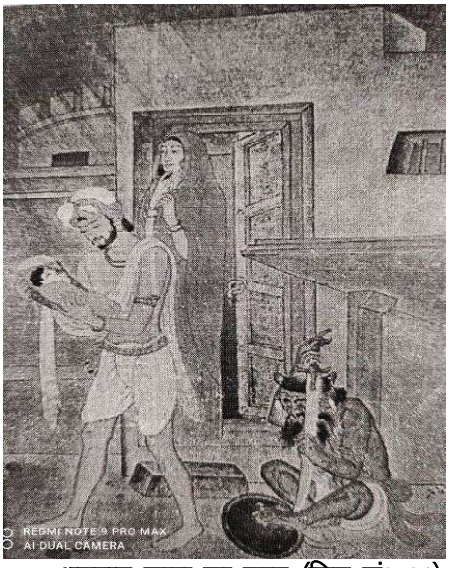

भगवान कृष्ण का जन्म (चित्र सं0 01)

झुकाए सोते हुए भूमि पर बैठा है। कृष्ण के पिता ने पोशाक में धोती व गम्छा पहन रखा है तथा सिर पर पगड़ी बांध रखी है। कृष्ण को इनके पिता ने एक कपड़े में लपेट रखा है। इनकी माता ने साधारण सी धोती पहन रखी है तथा एक हाथ से धोती के पल्लू को पकड़े हुई खड़ी है एवं दूसरे हाथ की ऊगँली ठोड़ी से छुते हुए बनाई गई है। नीचे बैठे व्यक्ति ने भी धोती पहन रखी है। चित्र पतली महीन रेखाओं द्वारा चित्रित हुआ है। चित्र वॉश तकनीक में बना है जिसमें बंगाल शैली के तत्व दृष्टिगत होते है। रंग–योजना, रुप संयोजन, आकृतियों के वस्त्रों की बनावट के आधार पर स्पष्ट होता है कि इस कृति पर बंगाल शैली का प्रभाव है। चित्र के परिप्रेक्ष्य में दरवाजा व अन्य दीवारें बनाई गई है जिनसे यह दृश्य उनके घर जैसा प्रतीत हो रहा है। (चित्र सं0 01)

मैरिज ऑफ पाबूजी राठौर

मैरिज ऑफ पाबूजी राठौर, चित्र सं0–2

कृपाल सिंह जी की इस चित्राकृति में एक पुरुशाकृति को ज्यामितीय अलंकरण युक्त घोड़े पर लगाम पकड़े बैठे हुए बनाया गया है। घोड़े को एक स्थान पर खड़े हुए तथा मुख झुकाए हुए दर्शाया गया है। घोड़े पर बैठी पुरुषाकृति भी अलंकृत वस्त्रों से सुशोभित है जिनमें पारदर्शी कुर्ता व पजामी पहनी हुई है तथा कुर्ते के ऊपर गहरे भूरे रंग की बिना आस्तीन की जैकेट पहनी हुई है जिस पर शाही अलंकरण है तथा सिर पर पगड़ी सुशोभित है। पुरुष के मुखमंडल पर प्रसन्नता के भाव झलक रहे है। सम्पूर्ण रुप से यह चित्र यर्थाथवादी प्रतीत हो रहा है। चित्राकृति के दोनो ओर अलंकृत हाशिये बनाये गये है। परिप्रेक्ष्य में आकाश में बादलों को दर्शाया गया है। चित्र में चटख रंगो का प्रयोग किया गया है। कृपाल सिंह शेखावत जी की यह कृति उनकी एकल कला प्रदर्शनी का सर्वोत्तम उदाहरण है। (चित्र सं0 2)

सेरामिक्स पॉट, चित्र सं0–3

सेरामिक्स पॉट

कृपालसिंह शेखावत जी ने ब्लू पॉटरी (चीनी मिट्टी के बर्तन) के क्षेत्र में भी कार्य किया। इस कलाकृति में इन्होंने चीनी मिट्टी के बर्तनों पर चित्रकारी करते हुए भिन्न–भिन्न आकृतियाँ चित्रित की है। इनमें पूर्ण रुप से अंलकारिक बेल–बूटे, पक्षियों, फूलों व पत्तों इत्यादि का अंकन किया है। चित्राकृति में सभी पॉट अनुपात में एक समान बनाए गये है। इनकी रंग योजना में नीले रंग का अधिक प्रयोग किया

है तथा ऊपरी भाग में अन्य रंगो का प्रयोग किया गया है इसी कारण से इसे ब्लू पॉटरी कहते है। इस चित्र में बने 3 पॉट में इन्होंने अलग–अलग रंग प्रयोग किये है। दायें भाग के पॉट में नीले रंग का प्रयोग तथा बीच के पॉट में पीला रंग तथा बाएं भाग के पॉट में आसमानी रंग का प्रयोग किया है। सभी पॉट में बने पक्षियों, बेल–बूटों तथा फूलों व पत्तियों में अलग–अलग रंगो का प्रयोग किया हैं किन्तु सभी में नीले रंग की अधिकता है। (चित्र सं0 3)

कृपाल सिंह जी प्रारम्भ से ही 'राधा–कृष्ण' प्रेम प्रसंग विषयों को चित्रांकित करने के लिए प्रेरित थे। इन्होंने महाकवि जयदेव द्वारा कृत गीत–गाविन्द व राजस्थानी लोकजीवन और इतिहास एवं राजसी पुरुषों की जीवन घटनाओं को भी बड़ी कुशलताओं से चित्रित किया। प्रमुख रुप से वासक सज्जा नायिका, डेफोडिल्स 1953, प्रतीक्षारत् कृष्ण 1950, पाबूजी ''राठौर ऑन हार्स बैक 1955, मीरा का जन्म 1956, रतन राणा 1957, ठाकुर कुशल सिंह 1957, कालकी फ्लांइग विद पाबूजी राठौर 1959, रामदेव जी 1960, गौगा जी चौहान 1961, हड़बूजी सांखला 1961, महाजी मांगलिया 1968, पंचवीर 1974 आदि उपरोक्त सभी चित्र वॉश, टेम्परा एवं स्याही से चित्रित है।''[6]

शेखावत जी की कला शैली में बहुत सी कला शैलियों का समन्वय दृष्टिगत होता है। इनकी शैली में मुख्यतः मुगल शैली, राजपूत शैली, बंगाल स्कूल और जापानी कला का प्रभाव भी दृष्टिगोचर होता है। जिस कारण इनकी एक नई शैली का विकास। ''प्रतीक चित्रण, रंग विन्यास आलेखन, शिल्प विधि में व्यापकता आती गई। 'पाबूजी राठौर का विवाह' नामक कृति में विन्यास मुगल, रंग नियोजन राजपूत और गठन कौशल में जापान की 'यातो' कलम का प्रभाव है। 'प्रतीक्षारत कृष्ण' पूर्णतः जापानी पद्धति पर और मेहोजी मांगवीर' राजस्थानी पद्धति में चित्रित है।''[7]

कृपाल सिंह जी की प्रथम एकल कला प्रदर्शनी सन् 1949 ई0, कलकत्ता में आयोजित हुई जिनमें इन्होंने अनेक कल्पनामय एवं यर्थाथवादी चित्रों को चित्रित कर जीवंत स्वरुप दिया था। ''भरत कैरींग रामाज सैडिल्स नामक चित्र इस प्रदर्शनी के सर्वोत्तम चित्र माने जा सकते है।''[8] इसके पश्चात् वर्ष 1950 ई0 में दिल्ली, लखनऊ तथा इलाहाबाद में इन्होंने अपनी कलाकृतियों की एकल कला प्रदर्शनी आयोजित की, जिससे सभी जगह इनकी ख्याति फैल गई। इन्होंने अपनी पाँचवी एकल कला प्रदर्शनी सन् 1953 ई0 में की जिसमें इन्होंने वॉश, टेम्परा तथा जलरंग आदि में बनी कलाकृतियों से अपनी कला कौशलता और कलानुभव का परिचय दिया। सन् 1955 ई0 से 1965 ई0 तक शेखावत जी ने विभिन्न माध्यमों व फलकों पर महत्वपूर्ण कृतियाँ रचित की, जिस कारण इन्हें राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली।

सन् 1956 ई0 में गीत–गोविन्द के एक प्रसंग पर निर्मित इन्होंने 'कृष्णा वेटिंग फॉर राधा' शीर्षक से रंगीन वुड़कट छापे, जो लॉस एन्जिलस आर्ट गैलरी, अमेरिका और फ्लोरेंस आर्ट गैलरी, इटली में सुरक्षित व संरक्षित है। सन् 1956 ई0 में वॉश–टेम्परा में सिल्क पर चित्रित 'आयरिश फ्लावर्श' नामक कृति वर्तमान में आधुनिक कला दीर्घा, नई दिल्ली में संग्रहित है। शेखावत जी का कला कौशल इन कृतियों में उच्च स्तर का है जिनमें एक ऐसे कलाकार का प्रभाव दृष्टव्य होता है जो प्रकृति की ताजगी का सजीव चित्रण, रंग प्रभाव और रेखाओं में सिद्धहस्त है।

कृपाल सिंह शेखावत जी ने कला क्षेत्र मे जो योगदान दिया उसके लिए उन्हें अनेक पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए। सन् 1950 ई0 में शेखावत जी को कलकत्ता आर्ट सोसाइटी की फैलोशिप प्राप्त हुई। सन् 1967 ई0 में हस्तशिल्प (ब्लू पॉटरी) के क्षेत्र में इन्होंने जो उत्कृष्ट प्रयास

किये उसके सम्मान स्वरुप इन्हें भारत सरकार द्वारा 'राष्ट्रपति पुरस्कार' प्राप्त हुआ। ''ऑल इण्डिया हैण्डीक्राफ्ट बोर्ड द्वारा मास्टर क्राफ्ट्समैन राष्ट्रपति पुरस्कार वर्ष 1967 तथा न्यूयार्क द्वारा विश्व के दस श्रेष्ठ क्राफ्ट्समैन में सन् 1974 में आमंत्रित किया गया।''[9] इसी वर्ष सन् 1974 में भारत सरकार ने कला की उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए कृपाल सिंह जी को 'पद्मश्री' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्ष 1990 में शेखावत जी को राजस्थान सरकार द्वारा 'राजस्थान श्री' की उपाधि से सम्मानित किया गया। ''कालिदास अकादमी पुरस्कार, कलाविद्, संस्कष्त सम्मान, महाराणा सज्जन सिंह पुरस्कार और कला विभूषण जैसे पुरस्कारों से भी शेखावत जी को सम्मानित किया गया।''[10] शेखावत जी की कला यात्रा 15 फरवरी, 2008 में रुक गई। शेखावत जी अंतिम समय तक कला चित्रण में सक्रिय रुप से सृजनरत् रहे। जिस कारण वर्तमान में भी इन्हें 'राजस्थान की धरती का चितेरा' नाम से संबोधित किया जाता है।

सन्दर्भ

1. दमामी, ए.एल. (2004). राजस्थान की आधुनिक कला एवं कलाविद् प्रथम संस्करण, पृष्ठ **42.**
2. (2006). समकालीन कला अंक 30 (जुलाई 2006–अक्टूबर 2006) पृष्ठ **22.**
3. मिश्र, अवधेश. क्षेत्रीय समकालीन कला, स्वर्ण जयंती वर्ष, राष्ट्रीय ललित कला अकादमी लखनऊ पृष्ठ **35.**
4. प्रताप, डा. रीता. (2013). भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी चौदहवा संस्करण, जयपुर, पृष्ठ **421.**
5. दुलैर, पुष्पा. (2019). राजस्थान की समसामयिक कला के माध्यम एवं तकनीकी प्रतीमान कलाकारो के सम्बन्ध में, पृष्ठ **69.**
6. प्रताप, डा. रीता. (2013). भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी चौदहवा संस्करण, जयपुर, पृष्ठ **422–423.**
7. प्रताप, डा. रीता. 2013, भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी चौदहवा संस्करण, जयपुर, पृष्ठ **423.**
8. शेश, हेमन्त. (1984). कृपाल सिंह शेखावत, राजस्थान ललित कला अकादमी, पृष्ठ **5.**
9. उपाध्याय, डॉ. विद्यासागर. आभार राजस्थान के वरिश्ठ कलाकारो का प्रलेखन, पृष्ठ **40.**
10. google, http://moomalgaliyara.blogspot.com.